भगवान का आपके लिए प्लान

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

क्या हम भगवान का अरमान पूरा कर सकते हैं जिसमें हमारा भी अरमान समाया हुआ है? यह संगमयुगी जीवन जो हीरेतुल्य है, इसको ऐसे ही समाप्त कर दिया तो क्या किया! सब-कुछ लुटा के होश में आये तो क्या फ़ायदा! हर कोई चाहता है कि मेरी जीवन विशेष हो। बाबा भी कहते हैं कि हर ब्राह्मण आत्मा विशेष है। भगवान सत्य स्वरूप है इसलिए उनके बोल सत्य हैं। उनका एक-एक अक्षर सत्य है क्योंकि वह सत्य स्वरूप है। मिश्री को आप जिधर से भी चखेंगे, उसमें मिठास ही होगी, नमकीन नहीं होगी। मिश्री का स्वभाव ही यह है, स्वरूप ही यह है। सत्य स्वरूप जो भगवान है, उनकी कही हुई हरेक बात सत्य है। वह हमें क्या कहता है कि आप मेरे विशेष बच्चे हैं। आप सबमें विशेषतायें हैं क्योंकि करोड़ों में से आप एक हैं। आपको मैं चुन-चुनकर लाया हूँ।

भगवान का हमारे लिए एक प्लान है। वह चुनकर ऐसे ही तो नहीं लाया है! हम भी कोई चीज़ ढूंढ़कर लाते हैं, बाज़ार से ख़रीदकर लाते हैं तो हमारे मन में कोई उद्देश्य होता है कि इसको ऐसे प्रयोग करेंगे या इससे ऐसा काम लेंगे। भगवान तो परम बुद्धिमान हैं, उन जैसा बुद्धिमान और कोई हैं नहीं। वह बुद्धिमानों का भी बुद्धिमान है। वह हमें चुनकर लाया है करोड़ों में से, वह भी बड़े सिक से, प्यार से। वह तो भविष्य दृष्टा है। कई बार कहा जाता है कि प्राचीन ऋषि-मुनि भविष्य दृष्टा थे, लेकिन उन्होंने भविष्य देखा भी था क्या! चलो, मान भी लेते हैं, थोड़ा बहुत देखा होगा परन्तु भविष्य सृष्टा नहीं थे। उन्होंने कोई सतयुग की स्थापना तो नहीं की! युग परिवर्तन तो नहीं किया! मनुष्य मात्र के भाग्य की रेखा तो नहीं बदली! परन्तु परमात्मा तो विधि के विधाता हैं। नये जगत के निर्माता हैं। अगर उन्होंने हमें चुना है, तो किस उद्देश्य से चुना है? उनको नये जगत का निर्माण करना है इसलिए चुनकर लाया है। उनके मन में भी यही है कि नये जगत के लिए इनको लायक बनाऊंगा। यह उनके ही मन में है। भगवान का संल्कप अटल है। उसका जो चिन्तन होता है वह अमर चिन्तन होता है, अमोघ (अचूक,अव्यर्थ) चिन्तन होता है। उसके रास्ते को कोई पहाड़ मोड़ नहीं सकता, कोई तूफ़ान रोक नहीं सकता, ख़ाली नहीं जा सकता। उसका हरेक तीर अचूक है, निशाने पर बैठता है। क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है, परम पवित्र है और भविष्य को स्पष्ट रूप में जानता है, देखता है। वैसे ही करने में समर्थ है इसलिए उसका वार कैसे ख़ाली जा सकता है! वह स्वयं कह रहा है कि आप मेरे शिष्य बच्चे हैं, मैं स्वयं आपको लेकर आया हूँ।

परमात्मा यह भी कहते हैं कि सतयुग के निर्माण के लिए आप विधायक हो। लॉ मेकर्स को 'मनु' कहते हैं, जिसने 'मनुस्मृति' लिखी। उसने और भी कई ग्रंथ लिखे हैं लेकिन उनमें से 'मनुस्मृति' प्रसिद्ध है। धर्म क्या है, अधर्म क्या है, मनुष्य को क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। जो नियम हैं, मर्यादायें हैं, द्वापरयुग से चले आते हैं, उनको मनु ने लिपिबद्ध किया जिसका नाम हुआ 'मनुस्मृति'। आज तक लोग उसे धर्मशास्त्र मानते हैं। उसके अनुसार ही ब्राह्मण लोग, पण्डित-पण्डे-पुजारी वर्ग चलते हैं। नियम बनाने वाले को 'मनु' कहते हैं, जो शाश्वत नियम हैं, जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले नियम हैं। कहते हैं 'मनु नियम निर्माता' वास्तव में ये मनु आठ हैं, जो सारी दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। परमात्मा ने जो नियम बताये हैं, उसके अनुसार वे स्वयं चलते हुए उसको दुनिया के आगे रख रहे हैं कि वास्तविक नियम यही हैं और इनसे ही लॉफुल संसार बनता है जिसमें नियमों का उल्लंघन करने वाले रहेंगे ही नहीं। आज लॉ बनाने वाले अलग हैं, लॉ अमल में लाने वाले अलग हैं, उनको तोड़ने वालों को पकड़ने वाले अलग हैं। उनका निर्णय करने वाले अलग हैं। न्यायालयों में लॉ की वकालत अथवा व्याख्या करने वाले अलग हैं। इतने सारे लॉ बनने पर भी दुनिया में लॉलेसनेस (अराजकता, नियमहीनता) है। एक न्यायाधीश निर्णय देता है तो लोग केस हाई कोर्ट में ले जाते हैं, फिर सुप्रीमकोर्ट में जाते हैं, फिर भी सही न्याय नहीं मिलता। कई बार अन्तिम और सही न्याय मिलता है। लेकिन उस आदमी को मरे कई साल हो जाते हैं। उसके जीवनकाल में निर्णय नहीं होता।

बाबा ने कहा कि आप हैं लॉ मैकर्स। आपका भविष्य क्या है? लोग ज्योतिषी को दिखाते हैं अपना हाथ, भविष्य को जानने के लिए। लेकिन परमात्मा हैं हमारे भाग्य की रेखा को बढ़ाने वाले। न सिर्फ़ भाग्य की रेखा बनाने वाले और बढ़ाने वाले लेकिन यह कहते हैं कि यह अधिकार मैं आपको भी देता हूँ। जो भाई-बहनें दूसरों को ज्ञान देते हैं, योग सिखाते हैं, पवित्र बनाते हैं, उन्होंने भी तो उनके भाग्य की रेखा बनायी ना! दुनिया में कोई है जो 5000 वर्षों के लिए किसी के भाग्य को उज्जवल, महान, सर्वश्रेष्ठ बना दे और 2500 वर्षों तक किसी भी प्रकार का दुःख, अशान्ति, कष्ट, क्लेश, तन का, मन का, धन का, किसी प्रकार का न हो!

अगर हम भी बाप समान बनना चाहते हैं और बाप का अरमान पूरा करना चाहते हैं तो कुछ प्रमुख बातें जानना ज़रूरी है। उनमें से एक बात यह है कि "मामेकम् शरणम् व्रज", एक मेरी शरण में आओ। एक मेरी शरण में आओ- यह ज्ञान का, योग का, धारणा का, आध्यात्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण महावाक्य है। सिर्फ़ महत्वपूर्ण नहीं, अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अगर इससे आप चूक जाते हैं, तो ज्ञान से, योग से सबसे चूक जायेंगे। आगे और कहा गया है कि " अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः" मैं सब पापों से मुक्त करूंगा'। 'मैं' करूंगा तुझे मुक्त। जैसे कोई दोस्त कहता है कि मैं बैठा हूँ ना! फलाना मेरा परिचित है, फलाना मेरा रिश्तेदार है, मेरे पास पैसा है, तू चिन्ता क्यों करता है! मेरे ऊपर छोड़ दे। तू चल, निश्चिन्त हो जा। तू काहे को माथा भारी करके बैठा है! चलो, ज़रा मुस्कुराकर दिखा दो। फिर दोस्त को कहता है, कुछ भी हो, मैं हूँ ना! मैं ठीक कर दूंगा, तू चिन्ता मत कर, मेरे भरोसे पर छोड़ दे। वहाँ कहने वाला तो मनुष्य है, यहाँ तो भगवान कहता है। यह बात कोई गुरू भी कह नहीं सकता। कल्पवृक्ष के नीचे, सृष्टिचक्र के नीचे आप देखेंगे, उसमें बाबा लिखवाते थे कि कोई भी मनुष्य किसी को मुक्ति दे नहीं सकता। मुक्ति और जीवनमुक्ति का दाता एक है। परमात्मा ही मुक्ति और जीवनमुक्ति का दाता है। किस मुक्ति का दाता है? विकारों से मुक्ति का, चिन्ताओं से मुक्ति का, दुःखों से मुक्ति का, सब प्रकार का दाता एक है। इसलिए कहते हैं कि 'सबका दाता एक राम' सब कहते हैं, परमात्मा एक है का अर्थ है, दूसरा कोई नहीं है। परमात्मा कल्याणकारी है अर्थात् दूसरा कोई कल्याणकारी नहीं है, दूसरा कोई गति-सद्गतिदाता नहीं है। ●●●

चैलचौक-मंडी(हि.प्र.)। राज्य स्तरीय पुरातन विख्यात नल्वाड मेले के उद्घाटन अवसर पर 'नशामुक्ति चित्र प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए जन स्वास्थ्य एवं सिंचाई मंत्री महेन्द्र सिंह ठाकुर। साथ हैं विधायक विनोद कुमार, ब्र.कु. जैवन्ती, ब्र.कु. नरेन्द्र तथा अन्य।

पानीपत-हरियाणा। 'बेहतर विश्व के नवनिर्माण में शिक्षकों का योगदान' विषय पर आयोजित शिक्षाविद सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष एवं कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय,शांतिवन, डॉ. अरुण,प्रिन्सीपल,एन.सी. कॉलेज,इसराना, विधायिका रोहिता रेवाड़ी, ब्र.कु. भारत भूषण,निदेशक,ज्ञानमानसरोवर, ब्र.कु. शिविका,मुख्यालय संयोजिक,शिक्षा प्रभाग, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सरला दीदी तथा अन्य।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। कॉर्पोरेट जगत के मानव संसाधन एवं प्रशासनिक उच्च पदाधिकारियों के लिए आयोजित 'प्रेरणादायक नेतृत्व' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन तथा जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी।

नवरंगपुर-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासनिक सेवा प्रभाग द्वारा 'स्पीरिचुअल सोल्यूशन्स फॉर स्ट्रेस फ्री लाइफ एंड इफेक्टिव गवर्नेन्स' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बायें से सब कलेक्टर,मुख्य वक्ता ब्र.कु. ख्याति,ओ.आर.सी.,गुरूग्राम, मुख्य अतिथि डॉ. अजीत कुमार मिश्रा,कलेक्टर एंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, राजयोगिनी ब्र.कु. नीलम दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका, ब्र.कु. शशि,भवानीपटना तथा रंजीत कुमार मलिक,डिविज़नल फॉरेस्ट ऑफिसर। इस अवसर पर 50 वर्षों से आध्यात्मिकता एवं राजयोग के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए ब्र.कु. नीलम दीदी को सर्टिफिकेट एवं मोमेन्टो देकर कलेक्टर ने सम्मानित किया।

सादुलपुर-राज.। 'म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान अभियान' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् पद्मश्री एवं स्थानीय विधायक डॉ. कृष्णा पूनिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. राजसिंह,मा.आबू, जेलर प्रेम शर्मा, ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. शीतल तथा अनिल शास्त्री।

भीनमाल-राज.। म्हारो राजस्थान समृद्ध राजस्थान अभियान का भीनमाल चौक पर स्वागत करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. शैल तथा माघ कवि विद्यामंदिर स्कूल के विद्यार्थी व शिक्षक।

दिल्ली-ओम विहार। गवर्नमेंट को-एजुकेशनल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में विद्यार्थियों को मेमोरी डेवलपमेंट विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. विमला।

जयपुर-राजापार्क। इंटरनेशनल लॉयन्स क्लब,जयपुर में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् सदस्यों के साथ ब्र.कु. स्नेहा तथा अन्य।